आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 04-05-2016 ● अंक-514 ● तारीख - 05 मई 2016, वैशाख कृष्ण - 13/14 ● गुरूवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)

महा जागरण

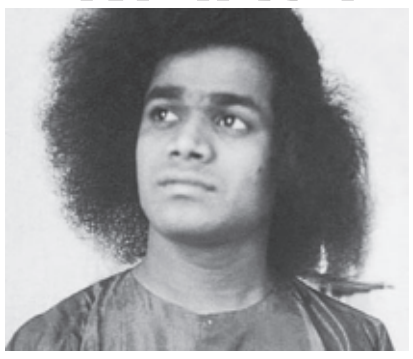

परिवर्तन आएगा अवश्य, महा जागरण का वह दिन दूर नहीं है। जब वह आएगा तो परमात्मा की सच्ची शक्ति का अनावरण होगा। परमात्मा के सर्वत्र होने का प्रकट रूप होगा। यह एक आगे बढ़ने का संकेत होगा तथा उन सभी को खरपतवार की तरह निकालकर फेंक दिया जाएगा जो इस समय चुनौती को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। मेरे विचारों पर ध्यान दो, ऐसा ही होगा। किंतु कुछ ही सुनेंगे, बहुत ही थोड़े। **–श्री सत्य सांई बाबा**

भगवान् शिव की स्तुति

भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणम्।
दक्षयज्ञविनाशनं त्रिगुणात्मकं
त्रिविलोचनम्।।
भुक्तिफमुक्तिफपफलप्रदं
सकलाघसनिबर्हणम्।
चंद्रशेखर माश्रये।।

मैं ऐसे भगवान् चन्द्रशेखर का आश्रय लेता हूँ, जो इस संसार रूपी रोग के लिए औषध् हैं, और समस्त विपत्तियों को दूर करने वाले हैं, जिन्होंने दक्षप्रजापति के यज्ञ का विध्वंस किया है, जो सत्व, रजस व तमो गणात्मक है, अर्थात् स्थिति की अवस्था में जो सत्वरूप धारण करते हैं, उत्पत्ति की अवस्था में जो रजोगुणरूप धारण करते हैं, और संहार की अवस्था में जो धारण का रूप धरण करते हैं। लोकविलक्षण जिनके तीन लोचन हैं, जो मुक्ति व मुक्तिरूप फल को प्रदान करते हैं, और भक्तों के समस्त पापजन्य ताप को दूर कर देते हैं। – **चंद्रशेखर स्त्रोत से**

कर्म का महत्व

जो मेरे भाग्य में है, उसे दुनिया की कोई भी शक्ति मुझसे छीन नहीं सकती।

ईश्वरीय शक्ति असम्भव को सम्भव बना सकती है। अतः कर्म ही 'कामधेनु' एवं प्रार्थना ही 'पारसमणि' है।

वैचारिक महाकुंभ में सिंहस्थ घोषणा पत्र जारी करेंगे मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 43 देशों के 600 से ज्यादा बुद्धिजीवियों व राजनयिकों के बीच उज्जैन से विश्व को शांति, अहिंसा, सद्भाव, प्रेम और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देंगे। वे निनोरा में वैचारिक कुंभ के समापन पर सिंहस्थ घोषणा पत्र जारी करेंगे।शहर से 11 किलोमीटर दूर इंदौर रोड पर 12, 13 व 14 मई को वैचारिक महाकुंभ होगा। शुरुआत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत करेंगे। समापन पर प्रधानमंत्री आएंगे। इसके लिए निनोरा में तैयारियां अंतिम दौर में चल रही हैं। शुक्रवार को पीएमओ में बैठक हुई। इसमें तय हुआ कि प्रधानमंत्री चार घंटे कार्यक्रम में रहेंगे। उनकी सुरक्षा का जिम्मा एसपीजी के साथ इंदौर पुलिस को दिया गया है। हालांकि उनका अधिकृत कार्यक्रम 10 मई के बाद जारी किया जाएगा।

कार्यक्रम स्थल पर दो कुटिया बनाई गई हैं। एक सीएम शिवराजसिंह चौहान

के लिए पंचवटी व दूसरी सांसद अनिल माधव दवे के लिए चित्रकूट। दवे ने बताया कुटिया को हर लिहाज से देशी परिदृश्य में ढाला गया है। महिलाओं ने लिपाई की है। स्थानीय कारीगरों ने घास–फूस से छत बनाई है। दरवाजे भी पुराने अंदाज के हैं। कार्यक्रम के दौरान सीएम यहीं रहेंगे।

समय पर इलाज (कहानी)

पुराने समय में कुशीनगर राज्य में एक प्रसिद्ध चिकित्सक था धरमसिंह। एक दिन वह वहां के राजा विजय प्रताप से मिलने गया। उसे राजा के हाथ पर कुछ निशान दखाई दिया। चिकित्सक ने राजा से कहा, 'महाराज, आपकी त्वचा पर यह निशान एक भयंकर बीमारी का लक्षण है। यदि समय रहते इसका इलाज नहीं किया गया तो बीमारी शरीर में घुस जाएगी।

लेकिन राजा को चिकित्सक की बातों पर विश्वास नहीं हुआ और उसने चिकित्सक की बात को अनसुना कर दिया। धरमसिंह के जाने के बाद राजा ने अपने मंत्रियों से उसकी मजाक उड़ाते हुए कहा, 'चिकित्सक तो सभी लोगों को बीमार बता देते हैं, ताकि अपना इलाज करके इनाम मांग सकें। कुछ दिनों बाद ही धरमसिंह फिर राजा से मिलने गया।

उसने राजा से फिर कहा, 'महाराज, आप की बीमारी मांसपेशी के अन्दर विकसित हो गई है। अभी भी समय है। नहीं तो यह ज्यादा गंभीर हो जाएगीं राजा ने फिर भी चिकित्सक की बात पर ध्यान नहीं दिया। वह विवश होकर चला गया। कुछ दिनों बाद चिकित्सक फिर राजा के पास गया और राजा का चेहरा देखते हुए बोला, 'आपकी बीमारी पेट तक पहुंच गई है। महाराज, अभी भी समय है।' इस बार भी विजय प्रताप ने उसकी बात नहीं मानी। कुछ दिनों बाद चिकित्सक फिर राजा के पास गया।

उसने राजा के चेहरे का रंग देखा तो वहां से तुरंत लौट गया। इस बार उसने राजा से कुछ नहीं कहा। राजा को यह देख बड़ा आश्चय्र हुआ। उसने अपना एक आदमी चिकित्सक से इस बात का कारण जानने को भेजा चिकित्सक ने राजा को कहलवाया कि जब बीमारी त्वचा पर थी तो लेप, काढ़े से इलाज हो सकता था। जब बीमारी मांसपेशी में पहुंची तो सुई से, पेट में पहुंची तो तेज काढ़े से इलाज संभव था पर अब बीमारी हड्डियों के भीतर तक पहुंच गई है इसलिए कोई चिकित्सक इसका इलाज नहीं कर सकता। इस बात के चार–पांच दिन बाद ही राजा के पूरे शरीर में दर्द होने लगा। उसने धरमसिंह को बुलवाया लेकिन वह राज्य से बाहर गया हुआ था। अंत में उस बीमारी ने राजा विजय प्रताप की जान ले ली। सच में बीमारी का पता चलते ही उसका समय पर इलाज होना जरूरी है नहीं तो जान से हाथ धोना पड़ सकता है।

आज का संकल्प

1. आज मैं प्रसन्नचित रहूँगा।
2. आज मैं अपने शरीर का ध्यान रखूंगा। दूनिया का सारा सौंदर्य स्वस्थ शरीर से है।
3. आज मैं किसी चिन्ता को अपने पास नहीं आने दूंगा। चिंता चिता के समान है, चिंता नहीं चिन्तन करो।
4. आज मैं क्रोध नहीं करूँगा और न किसी से कटु वचन बोलूँगा। क्रोध मूर्खता से शुरू होता है और पश्चाताप पर खत्म होता है।
5. आज मैं सब वर्तमान समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करूंगा।
6. आज मैं किसी के साथ छल कपट नहीं करूंगा। दूख की उत्पत्ति कपट से होती है।
7. आज मैं स्वाध्याय अवश्य करूंगा, और मननशील बनने का प्रयत्न करूँगा। जीव जगत में सिर्फ आदमी मननशील रह सकता है।
8. आज मैं झूठ नहीं बोलूँगा सत्य न बोलकर तुम झूठ अपने आप से बोलते हो।
9. आज मैं राष्ट्रहित के लिए सजग रहूंगा, प्रभु मेरी सहायता करे।

धार्मिक कौन?

1. सत्संग करने से कोई धार्मिक नहीं होता सत्य का संग करने से धार्मिक होता है।
2. स्वाध्याय करने से कोई धार्मिक नहीं होता, स्वयं का अध्ययन करने से धार्मिक होता है।
3. ईश्वर की चर्चा करने से कोई धार्मिक नहीं होता, ईश्वरमय जीवन जीने से धार्मिक होता है।
4. ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या कहने सें कोई धार्मिक नहीं होता, ब्रह्म को जीवन में अनावृत (अवतरित) करने से धार्मिक होता है।

मौन रहने के लाभ

1. कम बोलना हिम्मत है, कम बोलना सेहत, कम बोलना पूजा है।
2. मौन इन्सान की प्रतिष्ठा को बढ़ा देता है।
3. मौन रह कर हम किसी का दिल नहीं दुखा सकते।

भक्ति मार्ग

भक्ति मार्ग सबसे अधिक आनन्ददायक है। ज्ञान तुम्हें हाथी दांत की मीनार पर ले जाता है। तुम अकेले भटकते रहते हो। मैं पहले रमण महर्षि के साथ था जो स्वयं ज्ञानमूर्ति थे। और फिर मैं स्वामी के पास आया। रमण महर्षि ने मुझे वस्तुओं का अन्वेषण करने को कहा, यह मैं कौन हूँ? एक कोने में बैठकर तुम्हें विचार करना है कि तुम कौन हो ? एक विधि यह भी है, रामकृष्ण परमहंस ने कहा एक चींटी बनकर शक्कर के पहाड़ पर चढ़कर उसे चाटो व इसका स्वाद चखो, भक्ति का आनन्द इसी प्रकार है। तुम्हें स्वामी के हाथ व चरण सब स्थानों पर दिखाई देते हैं। स्वामी ने स्वयं कहा है कि यदि तुम कंकर अपने कान के निकट लाओगे तो प्रेम मुदित मन से तुम्हें स्वामी गाते हुए सुनाई देंगे। स्वामी तुम्हें अपनी ओर आते दिखाई देंगे और तुम्हारे सामने खड़े हो जाएंगे, यहाँ स्वामी, वहाँ स्वामी सब जगह स्वामी, हर वस्तु में स्वामी। कितना अद्भुत व सुन्दर अनुभव। अतः भक्ति सबसे आनन्दमय मार्ग है। तुम कभी भी हतोत्साहित नहीं होंगे। तुम सबसे खुश होंगे क्योंकि सारे संसार का आनन्द तुम्हारे पास होगा। यदि समझने के लिये नारद भक्ति सूत्र है यह प्रारम्भ होता है 'अथतो ब्रह्म जिज्ञासा' इसलिये अब हम ब्रह्म को समझने लगे हैं इसलिये 'अब' का क्या तात्पर्य है ? यह हमारे उच्च शिक्षा संस्थान में कोर्स के प्रारम्भ से प्रारंभिक भाषण जैसा है। जब डॉक्टर गोकाक कहते हैं अब हम कोर्स का पहला पाठ प्रारम्भ करेंगे, यह अब क्या है, अब जबकि तुमने परीक्षा पास कर ली है, अब जब तुमने फीस दे दी है और तुम्हारा नाम हाजिरी रजिस्टर में लिखा जा चुका है, हम प्रारम्भ करते हैं यहीं 'अथतो' है, इसलिये 'अब' है। अतः भक्ति की क्या योग्यता है ? स्वामी हॉस्टल के बालकों से कहते हैं, केवल नासिका के छोर पर ध्यान केन्द्रित कर साई राम, साई राम जाप कर बैठे हुए ध्यान करने का कोई लाभ नहीं है, यह इसलिये अब तुम ध्यान प्रारम्भ कर सकते हो। इसलिये 'अब' का तात्पर्य यह है कि ध्यान प्रारम्भ करने से पूर्व एक लम्बा अंतराल बीत चुका है जिसमें काफी तैयारियाँ की जा चुकी है। तुममें उतनी योग्यता सामर्थ्य होना चाहिये। तुम्हें इच्छा नहीं होना चाहिये, यदि तुम्हें कॉफी पीने की इच्छा है और तुम्हें कॉफी की गंध आती है तो ध्यान में व्यवधान पड़ जाता है। तुम्हें क्रोध नहीं होना चाहिये। यदि तुम ध्यान के लिये बैठे हो, तुम्हारे आसन के नीचे एक कंकर तुम्हें चुभ रहा है तो तुम्हें गुस्सा आ जाता है। शुलमैन चीनी ध्यान की विधि जैन के सम्बन्ध में अपना अनुभव बतलाते हैं –एक मकड़ी उड़ कर आयी, उसकी नाक पर बैठ गई जिससे उसका ध्यान में व्यवधान पड़ गया और वह क्रोधित हो गया। अतः क्रोध नहीं होना चाहिये। कटुता नहीं होनी चाहिये। तुम किसी को अधिक समय तक ध्यान में बैठे देखते हो तो कहने लगते हो, "सब बकवास" वह कैसे 15 मिनट तक ध्यान कर सकता है जबकि मैं 10 मिनट ही बैठ सकता हूँ। तुम किसी से तुलना करते हो, किसी से प्रतिद्वंदिता करते हो, तुम किसी अन्य पर जीत पाना चाहते हो, दूसरों की भक्ति को छोटा करना चाहते हो, दुख पहुंचाना चाहते हो, स्वामी कहते हैं कि तुम अपने मस्तिष्क से प्रदूषण हटा नहीं देते जब तक तुम्हारा मन शुद्ध नहीं है, पारदर्शी नहीं है, तुम इच्छाओं से मुक्त नहीं हो, प्रतिद्वंदिता, घृणा, झगड़ा अहं से मुक्त नहीं हो, तुम ध्यान रखने की योग्यता नहीं रखते। तुम किसी गुरू के पास जाकर उसे धनराशि दान देकर उसके सामने 15 मिनट बैठकर ध्यान कर सब कुछ पा नहीं सकते। जब तक तुम्हारा मन शुद्ध नहीं है। यह सब असंभव है। यदि तुम्हारा मन शुद्ध नहीं है तो तुम्हारी सोच किस प्रकार प्रेम व करूणा की मूर्ति तक पहुँच सकती है, यदि तुम्हारा हृदय प्रेम व करूणा से परिपूर्ण है तो उसमें ईश्वर प्रवेश कर रहने लगेंगे अन्यथा नहीं। अतः ध्यान की योग्यता रखना आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण है कि तुम हृदय में ईश्वर का स्वागत करने को तैयार हो, ईश्वर के तेज का स्वागत करने, प्रेम का हृदय में स्वागत करने के लिये तत्पर हो अन्यथा मात्र नाक के छोर पर केन्द्रित होकर किस प्रकार भगवान के पास पहुँचा जा सकता है। असंभव। भक्ति एक लम्बी यात्रा है। लम्बी या छोटी या प्रेम में परिपूर्ण आनन्द से परिपूर्ण यात्रा है। इसका हर क्षण विभोर करने वाला है। भक्त का यह अधिकार है, उसे उदास रहने का अधिकार नहीं है। यदि वह उदास है तो उनका तात्पर्य है कि उसे भगवान पर भरोसा नहीं है। इसका मतलब है कि वह रास्ता भूल चुका है। भगवान प्रेम है, प्रकाश है, आनन्द है, तुम भी प्रकाश, प्रेम व आनन्द बनो यदि तुम स्वयं को इनके साथ सम्बद्ध कर लोगे तो भक्ति मार्ग सहज हो जायेगा। ओम साई राम। –श्री एन. कस्तूरी के प्रवचन से

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल

पिण्डवाड़ा की पीड़ा

खून तो भगवान ने बनाया है और भगवान के बनाए हुए किसी मनुष्य के काम आता है। हमारे गणेश जी डागलिया जी ने तो 42 बार खून दान किया था। हमारे डॉ. अग्रवाल साहब ने 40 बार खून दिया। जो अन्तरिक्ष से आशीर्वाद दे रहे है। मैं जिनके कर्तव्य को कम निभा पाया उनके प्रति मुझे अहसास होता है। काश में और निभा पाता, काश मैं उनके लिए और कर पाता, काश मैं उनके पास जा पाता, काश मैं रोज उनकी सेवा कर पाता।

ये तो प्रेम की गंगा मिला रही रे,
ये नारायण सेवा,
ये तो सद् रास्ता बता रही रे,
ये नारायण सेवा।

नारायण सेवा का अर्थ है, मनुष्य को कैसा बनना चाहिए। नारायण सेवा का अर्थ है प्रातः काल उठकर मुस्कुराना चाहिए और आदत डालने पर ही ये सम्भव हो जाता है। आप 5–7 दिन रोज याद रख के मुस्कुराए 8वें दिन अपने आप मुस्कुरा लेंगे। आदत पड़ जाएगी। हमें अहसास हो जाए। कि हमें अमृत वेला में उठना चाहिए। हमें अहसास हो जाए हमें। कि पराये आसूं पोछने चाहिए। अभी आज ही टी.वी. से सुन रहा था। दिनकर जी जो राज्य सभा के सदस्य थे। वीर रस के कवि थे राष्ट्रीय कवि उनकी कविताओं के 50 वर्ष पूरे हो गये। इसके कारण कार्यक्रम बनाया गया। विज्ञान भवन में दिल्ली में बहुत अच्छा। ये प्रेरणा दायक हैं। जैसे हमारे वीरों ने कहा स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

चक्रवर्ती सम्राट को पुण्योर्पजन का शौक कुछ ऐसा लगा कि प्रजा से पुण्य खरीदने लगे! एक ऐसी तराजू बनाई गई जिसमे किसी के पुण्यों के लेखों का कागज एक पलड़े में रखते ही दूसरे पलड़े में उसके बराबर स्वर्ण मुद्राएँ तुल जाती।

विधि ने अपना काम किया, पड़ोस के राजा ने आक्रमण किया– परिणाम में हार मिली, चक्रवर्ती सम्राट को रानी, पुत्र सहित रात्रि के अंधेरे में भागना पड़ा! पर, खाने को कुछ नहीं था–साथ। पड़ोसी राज्य में जाकर कुछ मेहनत की, जिससे एक समय की भोजन सामग्री नसीब हुई। रानी भोजन बना ही रही थी कि एक भिखारी ने दयनीय स्वरों में भोजन की याचना की। सम्राट द्वारा याचना को विनयपूर्वक अस्वीकार करते देख रानी ने कहा– राजन् यदि एक दिन और भूखे रह जायेंगे हम तो, इस भूखे का पेट भर जायेगा.... .दे दीजिए इसे भोजन।

कुछ दिनों की कठिन यात्रा के बाद राजा ने अत्यन्त चिन्तित होकर रानी से कहा'' अब आगे का जीवन कैसे चलेगा?'' रानी ने सुझाव दिया–''अपने कुछ पुण्य यहाँ के नरेश को बेचकर हम कुछ सवर्ण मुद्राऐं लेकर सुखी जीवन जी सकते हैं।'' राजा को बात अच्छी लगी। सम्राट ने वहाँ के राजा के पास अपनी बात रखी, तो वे तैयार हो गये, पर यह क्या? सम्राट ज्यों–ज्यों पुण्य का लेखा तराजू में रखते पर पलड़ा हिलता तक नहीं। सभी ओर से घेरती निराशा के बीच रानी को भिखारी को दिया भोजन याद आया, तब लेखा पर्ची, पलड़े में पड़ी में तो दूसरी ओर सहस्त्र सवर्ण मुद्राएँ आ गई– पलड़े में। सम्राट ने तुरन्त जान लिया कि वास्तव में पुरूर्षाथ द्वारा अर्जित राशि का दान ही सार्थक है।

आदरणीय महानुभावों, आप श्री द्वारा भी जो कठोर परिश्रम द्वारा धन रूपी लक्ष्मी का अर्जन इस संस्थान को दिया जा रहा है, वह ऐसा ही दान है। आप द्वारा दिए गये दान से पशुवत चलने वाले अपने पांवों पर खड़े हो रहे हैं, जिनके मां–बाप नहीं हैं ऐसे बच्चे सुसंस्कार एवं विद्या दान अर्जित कर रहे हैं, बेसहारा एवं गरीब बहिनें स्वावलम्बन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं, वनवासी क्षेत्र के अभाव ग्रस्त दीन हीन बीमार औषधि प्राप्त कर रहे हैं–घर बैठे। सैकड़ों परिवार आजीवन व्यसन मुक्त होकर सभ्य एवं सुखी ग्रहस्थ जीवन जी रहे हैं।

आइए, हम भी ऐसा प्रण लें कि जब तक कुछ भी देने का सामर्थ्य परमात्मा बनाये रखेगा, तब तक किसी जरूरत मन्द को निराश नहीं लौटने देंगे।

सुविचार

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश ही नहीं की

'' अब दिव्यांग भी दौड़ेगा, अपनी लाठी छोडेगा ''

उज्जैन। आगरा रोड सेक्टर 5 मंगलनाथ क्षैत्र मे सिंहस्थ महाकुंभ में आयोजित नारायण सेवा संस्थान कुम्भ खालसा के तत्वावधान में आयोजित 'श्रीमद् भागवत कथा' संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि आज प्रथम दिन की पावन कथा का श्रवणपान कराते हुए, व्यासपीठ पर विराजीत पू. रामकृष्ण जी महाराज ने भागवत महात्म्य की कथा का महत्व समझाया। कथा श्रवण करने मात्र से मनुष्य अपने जीवन कि व्यथाओं से निवृत्ति पा लेता हैं, और ईश्वर चरणारविन्द मे अपने चित्त को लगाते हुए हरि को हृदय में समाविष्ट कर लेता हैं। ज्ञान, वैराग्य और भक्ति कि विलक्षणता को बताते हुए कहा कि–ज्ञान, वैराग्य आदि साधन एक वृक्ष कि तरह हैं, जैसे सारे वृक्ष अन्त में फल देते हैं उसी प्रकार ईश्वर के प्रति ज्ञान और संसार के प्रति वैराग्य धारण करने से भक्ति रूपी फल कि प्राप्ति होती हैं। अतः इसी भक्ति से परमानन्द रस कि प्राप्ति हो जाती हैं।इस प्रकार आत्मदेव ब्राह्मण का चरित्र और धुंधकारी जैसे महाखल के जीवन कि निवृत्ति कि कथा का सरसवर्णन सुनाया। संचालन श्री कृपा व्यास ने किया।

संस्थान के संस्थापक आचार्य महामण्डलेश्वर 1008 पद्मश्री अलंकृत साधु कैलाशजी मानव ने बताया कि आज शल्य चिकित्सा शिविर का उद्घाटन डॉ. ए.एस. चुण्डावत सा. द्वारा मंत्रोच्चार के साथ विधिवत किया गया सिंहस्थ कुंभ उज्जैन शिविर के प्रभारी राकेशजी शर्मा ने बताया आज 10 दिव्यांगों के ऑपरेशन किये जायेंगे ''अब दिव्यांग भी दौडेगा, अपनी लाठी छोडेगा'','' नर सेवा ही,नारायण सेवा हैं।'' उद्बोधन में कहाँ। हरिप्रसाद, अरूण, विनोद, बंशीलाल, किशन, संजय शर्मा, दुर्गेश, नरेन्द्र आदि साधक मौजुद थे।

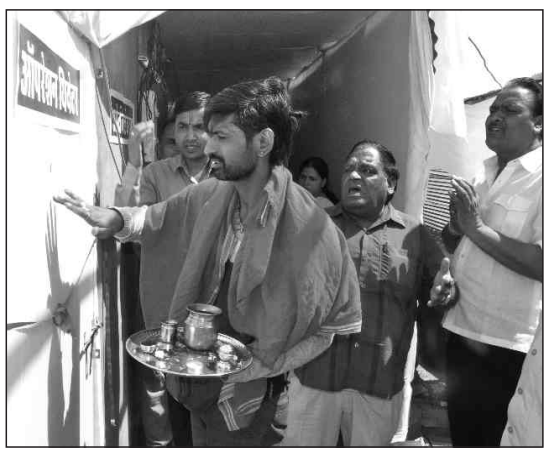

भारत के कुछ प्रमुख ऐतिहासिक शहर

अहिछत्र – उ. प्र. के बरेली जिले में स्थिति यह स्थान एक समय पाँचालों की राजधानी थी।

आइहोल– यह स्थान कर्नाटक में स्थित है। इसकी मुख्य विशेषता चालुक्यों द्वारा बनवाए गए पाषाण के मंदिर हैं।

अजंता की गुफाएँ– यह स्थान महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है। इसमें 29 बौद्ध गुफाएँ मौजूद हैं। यह गुफाएँ अपनी चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हैं। इनका काल 2 सदी ई. पू. से 7 शताब्दी ई. तक है।

अमरावती–यह ऐतिहासिक स्थल आधुनिक विजयवाड़ा के निकट स्थित है। सातवाहन वंश के समय में यह स्थान काफी फला–फूला।

अरिकामेडू– चोल काल के दौरान पुडुचेरी के निकट स्थित समुद्री बंदरगाह।

बादामी या वातापी– कर्नाटक में स्थित यह स्थान चालुक्य मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है जो कि गुहा–मंदिरों में पाई जाती है। यह स्थान द्रविड़ वास्तुकला का उत्तम उदाहरण है।

चिदाम्बरम – यह स्थान चेन्नई के 150 मील दक्षिण में स्थित है और एक समय यह चोल राज्य की राजधानी थी। यहाँ के मंदिर भारत के प्राचीनतम मंदिरों में से हैं और वे द्रविड़स्थापत्य व वास्तुकला का बखूबी प्रतिनिधित्व करते हैं।

बोध गया– यह स्थान बिहार के गया जिले में स्थित है। इसी स्थान पर बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति किया था।

खसरा लक्षण और बचाव

खसरा श्वसन प्रणाली में वायरस, विशेष रूप से मोर्बिलीवायरस के जीन्स पैरामिक्सोवायरस के संक्रमण से होता है। खसरा बहुत ही संक्रामक रोग है। जो संक्रमित व्यक्ति के साथ एक ही घर में रहते हैं, वे इसके शिकार हो सकते हैं। यह संक्रमण औसतन 14 दिनों (6–19 दिनों तक) तक प्रभावी रहता है।

लक्षण

खसरा होने पर शरीर में टूटन, थकान, चिड़चिड़ापन होता है। धीरे–धीरे लाल रंग के दाने पूरे शरीर पर दिखाई पड़ने लगते हैं। बुखार 103 से 104 डिग्री तक हो सकता है। आंखों में लाली, सूजन, चिपचिपापन, खुजली, पानी निकलना और बेचौनी रहती है।

कैसे बचें इस बीमारी से –

रोगी को रोज ताजे पानी से और बिना साबुन के आराम से नहलाएं। ढीले सूती सफेद कपड़े पहनाएं और उन्हें रोज बदलें। आम तौर पर सभी बच्चों को एमएमआर टीके लगाए जाते हैं, जिससे यह बीमारी जल्दी ठीक होती है।

उत्साह उमंग उल्लास

(मानव धर्म शृंखला का तृतीय (3) पुष्प)

मेरा गम कितना कम है?

आधा जबड़ा–पड़ा काटना... कैंसर

गतांक से आगे.....

महिम जी– आइए चलते हैं कथा में आगे की ओर, जानते है वो प्रसंग जिससे विगत कई वर्षों से गुरूदेव ने और गुरूदेव के साथियों ने हिन्दुस्तान के कई क्षेत्रों के ऐसे दृश्य देखे, जिससे रोम–रोम खड़ा हो गया, हृदय विकल हो उठा। ऐसे कैसे दृश्य थे, छोटा सा दृश्य – जब मेरी आँखें भर आयी।

देखा कहीं कैंसर गले का, डॉक्टर आर.के. अग्रवाल जी।
आधा जबड़ा पड़ा काटना, ऑपरेशन कर किया ठीक जी।
टेढ़ा मेढ़ा मुँह दिखता था, उसे देख कर दया आ गई।
उसे देख कर मानव जी की, आँखे आँसू से भर आई।

गुरूदेव जी– हे प्रभु ये ठोड़ी से माँस लटकने लग गया और करीब 9–10 इंच की गाँठ, बड़ी, होकर नीचे लटक गई। उस भैया का मुंह भी नहीं खुल पाता था, इतना वजन हो गया था कि भोजन भी नहीं कर पाता था। उसको कैंसर रोग ने भी ग्रसित कर लिया था। जब डॉ. आर.के. अग्रवाल साहब ने उसे देखा, उनकी आँखे भी नम हो आयी। उन्होंने कहा–कैलाश.., इसको अपने मानव मंदिर में भर्ती कर देते हैं, चैनराज सावंतराज लोढ़ा पोलियो हॉस्पीटल में। मैं नमन करता हूँ बाबूजी चैनराज जी साहब को जिनका जन्म ही मानव सेवा के लिए हुआ। **"पीर पराई जाने रे, वैष्णव जन तो तेने कहिये"।** कैसे वैष्णव जन ने पहला हॉस्पीटल बनाया, उसमें आज भी मैं रोमांचित हो जाता हूँ, मेरी आँखे भर आती हैं, जब पहले फ्लोर के वार्ड में वो भैया रामुड़िया, जिसकी गर्दन, मुँह लटका हुआ। उसकी आँखों में आँसू आते थे, उसके मुँह से पानी आता था। हमारे थाणा के नारायण सेवा के अध्यक्ष महोदय महेश जी अभी भी कहते हैं, जब आपने उसको गले से लगा लिया, जिसको दूर से देख कर ही आँखों में मींचनी आ जाती थी, मुँह उधर हो जाता था, देखने का मन नहीं करता था। अरे वो भी तो मनुष्य है, वो भी इन्सान है, आप में इन्सानियत है। ये इन्सानियत की कथा, ये मानवधर्म की कथा, ये करूणा और दया की कथा, ये सेवा के सौभाग्य की कथा ।

———————

जीव दया प्रेम का आधार

मनुज के घर चोरी... श्वान ने बचाई... गौ ग्रास...

महिम जी– हम आगे के प्रसंग की ओर चलें, इससे पूर्व दो मिनट की ये घटना, जो वो कुलदागी और मनुज जी के जीवन को बताती है। एक बार मनुज जी अपने पूरे परिवार के साथ तीर्थ यात्रा पर चले जाते हैं। आनंद और उत्साह के क्षण, वहाँ मनुज जी सत्संग कर रहे हैं, प्रवचन सुन रहे हैं, धर्म और दान कर रहे हैं। यहाँ जब उनके घर पर ताला लगा हुआ है तो कुलदागी का छोटा भाई लफड़ांतु रोज उधर से निकलता है। एक दिन पूछा उसने किसी से कि आजकल इनके घर ताला क्यों लगा रहता है तो पता लगा कि सब तीर्थ यात्रा पर गये हैं। .....

क्रमशः

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एम.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर-3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई-डी-71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com